पीढ़ी खेती और परज़्परागत व्यवसाय करने को तैयार नहीं है। सरकार हो या अनुसंधान संस्थान सबका ध्यान कॉर्पोरेट क्षेत्र में अधिक है। कारीगरों के जीवन में गुणात्मक सुधार के लिए कोई ध्यान नहीं दिया गया है। कम गुणवज़ा वाले सामान गांवों में पहुंचने लगे हैं, इसलिए साप्ताहिक बाजार अस्थिर हो गया है।

दीनदयाल शोध संस्थान के उपाध्यक्ष श्री प्रभाकरराव मुंडले ने कहा कि जो शिक्षित है वह अशिक्षित से अच्छा है, प्रज्ञा से अच्छा ज्ञान है। लेकिन आज सभी क्षेत्र में सक्रियता की जरूरत होती है। व्यक्ति में क्षमता, समता, सृजनशीलता होनी चाहिए। इस क्षेत्र में सिर्फ कुशलता ही पर्याप्त नही है।

भारत की आत्मा गांव में बसती है। कृषक और कारीगर सामर्थ्य और सज़्मान का प्रतीक है। देश में कृषि के बाद कारीगर क्षेत्र ही रोजगार उपलज़्ध कराने वाला सबसे बड़ा क्षेत्र है। कारीगर समाज को उनके सामर्थ्य के प्रति जागृत कराने का महत्वपूर्ण कार्य कारीगर पंचायत 1984 से कर रहा है। आधुनिकता के दौर में कारीगरी बाजार, कारीगर नीति, कारीगरी शिक्षा, आधुनिक शहर और कारीगर इन विषयों पर सीधे कारीगरों से निरंतर संवाद करने का प्रयास हो रहा है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के जन्म शताज़्दी वर्ष में अंत्योदय का विचार जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास है। आधुनिकीकरण के कारण कारीगरों के सामने बहुत ही विकट और अस्थिरता पैदा हो गई है। जो समुदाय समानता के पक्ष में और गुलामी के विरूद्ध खड़ा था, आज वही समाज अपनी आ जीविका का साधन, क्षमता, पात्रता, कार्य कुशलता, तकनीक और सृजनशीलता को इस आधुनिकता के समय में खो रहा है। अब समय आ गया है कि हम अपने प्रगति का पुनरावलोकन करें और इस आधुनिक युग से तालमेल रखते हुए नए मार्ग का निर्माण करें। इसी विचार से निरंतर विकास में पारंज़्परिक कारीगरों की भूमिका विषय पर सज़्मेलन का आयोजन किया गया। यह आयोजन दीनदयाल शोध संस्थान, राष्ट्रीय कारीगर पंचायत, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा किया गया था। आयोजन स्थल पर कारीगरों द्वारा निर्मित सामग्री की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। जिसमें बांस,धातु, चमड़ा तथा हस्तशिल्प के सामना रखे गए थे। ■